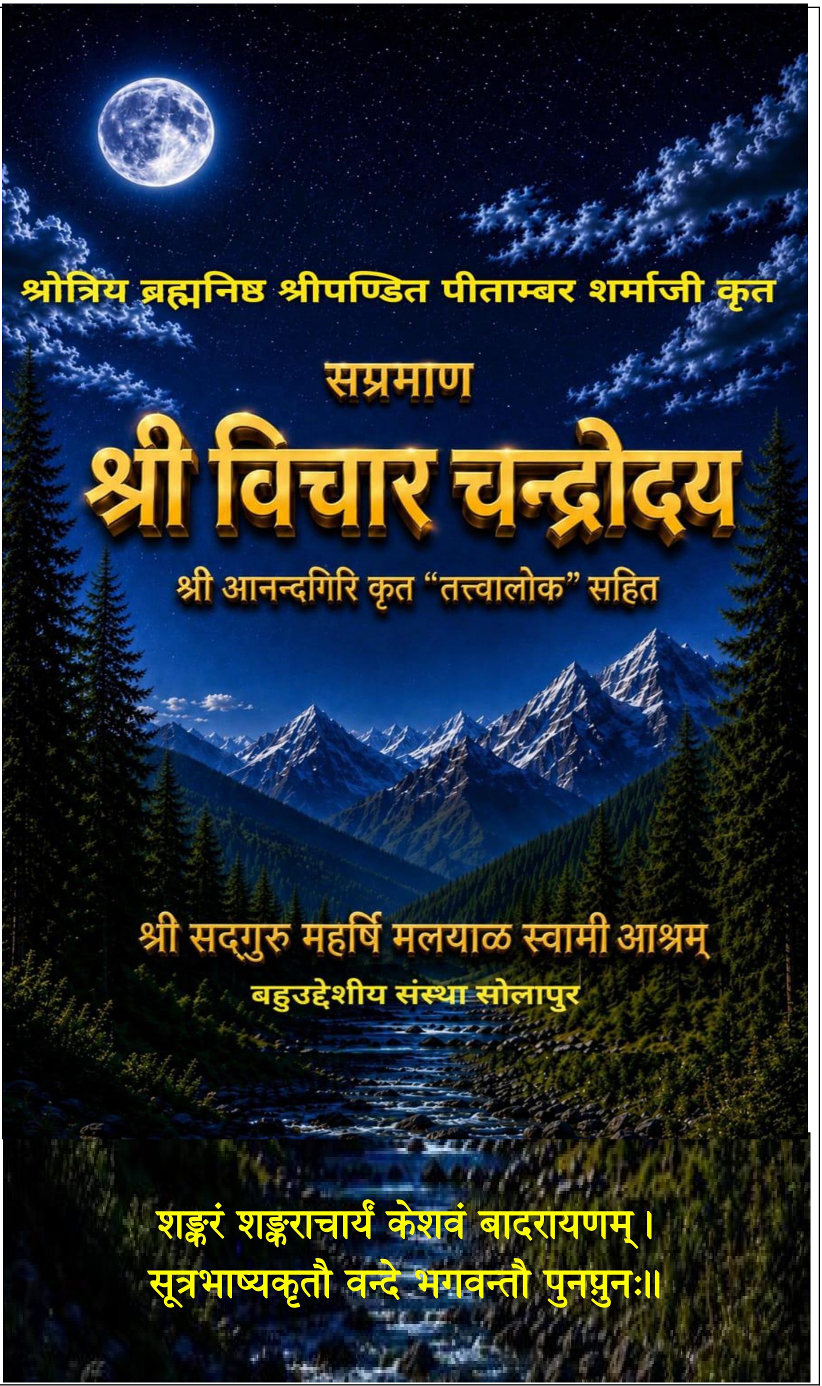
श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्रीपण्डित पीताम्बर शर्माजी कृत
सप्रमाण
श्री विचार चन्द्रोदय
श्री आनन्दगिरि कृत "तत्त्वालोक" सहित
श्री सद्गुरु महर्षि मलयाळ स्वामी आश्रम्
बहुउद्देशीय संस्था सोलापुर
शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनःपुनः॥

ॐ

**श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ**

**श्रीपण्डित पीताम्बर शर्माजी कृत**

**सप्रमाण**

# श्री विचारचन्द्रोदय

उनके जीवनचरित्र और सटीक

श्रुतिषड्लिङ्गसंग्रहः

तथा

श्रीआनन्दगिरि कृत “तत्त्वालोक”समेतः

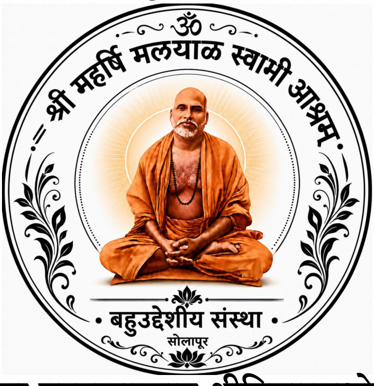


**श्रद्धया गुरुवक्त्राब्जात् श्रीविचारचन्द्रोदयम् ।**
**श्रुत्वा ज्ञानमयो चन्द्रो उदयते हृदये ध्रुवम् ॥**

जो मुमुक्षु श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरुकी मुखारविन्दसे इस “श्रीविचारचन्द्रोदय” को श्रद्धापूर्वक श्रवण करेगा, उनके हृदय में निश्चयरूपसे ज्ञानरूप चन्द्र का उदय होगा।

**आविष्करण:-** श्रीपराभव नाम संवत्सर आषाढ शुक्ल एकादशी.
**Date:** July 25/2026 Saturday **मूल्य रुपये : 499/-**

**Cantact:** 8624983944; 7385210230

**Computerized by:** Swami Brahmavidyananda
and Swami Advaitananda
Shri Mahrshi Malayalaswami Ashram,
Plot no.48, Kalavathinagar, M.I.D.C. Solapur.

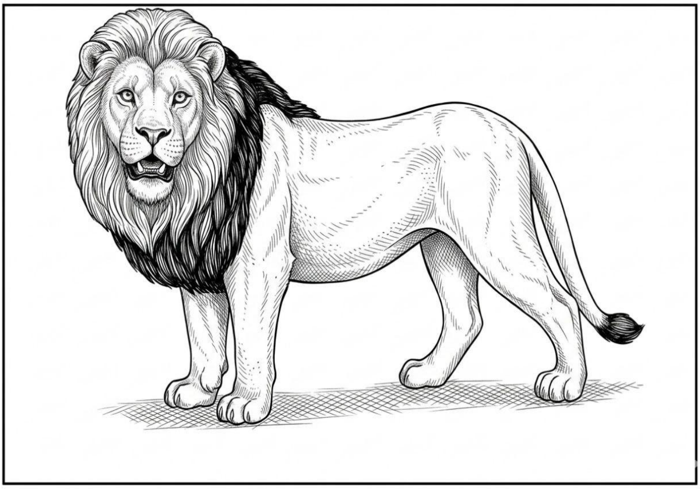

**तावद्गर्जन्ति शास्त्रणि जम्बुकाविपिने यथा।**
**न गर्जति महाशक्तिर्यावद्वेदान्तकेसरी॥१॥**

अर्थ:-जैसें वनविषै श्याल नामक पशुविशेष तहांलगि गरजते हैं। जहांलगि सिंह नहीं गरजता है। तैसे अन्य सांख्य न्यायादिक- शास्त्र तहांलगि गरजते हैं। जहांलगि महाशक्तिमान् वेदान्त शास्त्ररूप सिंह नहीं गरजता है।

ॐ

मातृवत्करुणार्णवः प्रशमिताशेषक्लेशसन्दोहकः
यस्या(मा)श्रित्यमुमुक्षवो भवभयात्तीर्णाः सुखं लेभिरे।
स्वाभिन्नं परब्रह्मतत्त्वममलं ज्ञात्वा प्रमोदाशयाः
तं श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठममलं पीताम्बराख्यं नुमः॥

भावार्थ—जो माता के समान करुणासागर हैं, जिनका आश्रय लेकर मोक्षकामना रखने वाले मुमुक्षुजन संसार-भय से पार होकर परम सुख प्राप्त करते हैं; जिनकी कृपा से अपने से अभिन्न निर्मल परब्रह्मतत्त्व का ज्ञान प्राप्त कर हृदय आनन्द से भर उठता है, उन श्रोत्रिय एवं ब्रह्मनिष्ठ पीताम्बरगुरु को हम नमस्कार करते हैं।

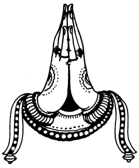

ॐ

**श्रीपरमात्मने नमः**

## दो शब्द

श्रीपण्डित पीताम्बरजीकृत‘श्रीविचारचन्द्रोदय’ग्रन्थ प्राकृत भाषा मैं महत्त्वपूर्ण सूक्ष्म,गम्भीर औ अत्यन्तसरल है।याको श्रीगुरुमुख द्वारा अध्ययन करनेसैं अधिकारी पुरुष प्रत्यगभिन्न परब्रह्मस्वरूपकूं अनायास प्राप्त करिलेवै।यामैं लेशमात्र बी संशय नहीं।याको सम्यक् प्रकारसैं पढै,तो भाष्यादिआदि सर्वोत्कृष्ट संस्कृत ग्रन्थोंकोबी समझने मैं निश्चितरूपसैं सुगमता होगी। इस ग्रन्थका अध्ययन अधुनातन विश्वभरमें प्रचलित है।

वेदान्त प्रक्रियाओंको अतिसरलतासैं स्पष्ट करनेवाली इस ग्रन्थ का अध्ययन हमनें कईवार हमारे विद्यार्थियों को कराये हैं। इस अद्भुत ग्रन्थकी महिमाको श्रवण करिके बहुतसैं हमारे विद्यार्थीगण प्रार्थना किये हैं कि “इस ग्रन्थमें उपनिषदों का ही प्रक्रियाओं का प्रतिपादन है। फिरभी उन उपनिषदोंका और अन्यान्य संस्कृत ग्रन्थों की प्रमाण जहां जहां अपेक्षित है,उनकी साक्षात् उद्धृत करिके मुद्रण करिलेवै तो इस ग्रन्थका महत्व,शोभा और बढेगा।वैसैही विद्यार्थियों को सम्यक् प्रकारसैं मनन करनेका अवसर बी मिलेगा”।ऐसी उनकी तीव्रतर जिज्ञासा देखिके,इस ग्रन्थको सुधारिके,विश्वभरके सर्व मुमुक्षु जनोंके अध्ययन सुखद हो, औ सभी का कल्याण हो,या अभिप्रायसैं इस दुर्मिल महत् ग्रन्थको फेरि प्रकट करनेअर्थ साहस करूं हूँ। हमारे विद्यार्थी तपस्वी ‘अद्वैतानन्दजी’ने इस ग्रन्थकी मुखपृष्ठ औ ग्रन्थके मध्यगत अनेक चित्रोंको बनानेमें, proofreading में औ ‘कंप्यूटरैजिंग’ कार्यमें औ मुद्रण करने में बहुत सहायता किये हैं। इनको ईश्वरकी तरफसैं हमारा हार्दिक शुभाशीर्वाद है।

इस ‘श्रीविचारचन्द्रोदय’ ग्रन्थमें हमनें-

१)ग्रन्थ के नामधेयानुरूप मुखपृष्ठ बनाये हैं।

२)विषयानुक्रमनिका में प्रत्येक कला का पृष्ठसंख्या और उस

कलाके प्रमुख विषयोंकाबी पृष्ठसंख्या देकर विषयसूचिकाको विस्तृत किये हैं।

३)प्रत्येक कला के आदिमें 'श्री पण्डित पीताम्बरजी'के जितने दोहे हैं, उन सबका हिन्दी अनुवाद दिये हैं।

४)ग्रन्थमें जहां जहां विषयके अनुसार उपनिषद्, गीता, ब्रह्मसूत्र, श्रीयोगवासिष्ठ, विवेकचूडामणि इत्यादि संस्कृत ग्रन्थोंमें से प्रमाणोंकी अपेक्षा हुई,वहां उन प्रमाणोंको उद्धृत किये हैं।इस ग्रन्थ के विषय को पुष्ठि और स्पष्ट करनेवाले विषय को बी अन्य ग्रन्थोंमेंसैं उद्धृत करिके अधिकसैं जोड दिये हैं।

५)मूलग्रन्थके विषयको किंचित् बी बदले नहीं। मूलग्रन्थ के अक्षरों का परिमाण (font size) बढा है, और हमनें जो प्रमाण औ विषय दिये हैं, उन अक्षरोंका परिमाण (font size) छोटा है।

६)श्री पण्डित पीताम्बरजी के दिये गए टिप्पणियों की संख्यामें औ विषयमें यत्किंचित् बदलाव नहीं किये हैं।ज्योंका त्यों रहने दिये। परन्तु विषयमें टिप्पण जहां चिन्हित किया गया है, वहीं पर (तुरन्त उसी विषयके नीचे)उस विषय के संबन्धित टिप्पण को जोड दिये हैं। कहीं कहीं उस पृष्ठके नीचले भागमें दिया गया है।

७)षोडश कलाके दो भागों (श्रुतिषड्लिंगसंग्रह औ लघुवेदान्त कोशरूप वेदान्तपदार्थसंज्ञावर्णन) को व्यतिक्रमसैं दिये हैं। अर्थात् 'लघुवेदान्तकोशरूप वेदान्तपदार्थसंज्ञावर्णन'को मूलग्रन्थका संबन्धित होनेके कारण पहले दिये हैं। और 'श्रुतिषड्लिंगसंग्रह' को पृथक् ग्रन्थ (उपनिषदोंको संबन्धित)होने के कारण बादमें दिये हैं।

८)'लघुवेदान्तकोशरूप वेदान्तपदार्थसंज्ञावर्णन'मेंबी कुछ शब्दों (पदार्थों) को संबन्धित प्रमाणों को अन्यान्य संस्कृत ग्रन्थों से उद्धृत करिके दिये हैं।और पदार्थद्विविध,पदार्थत्रिविध इत्यादि षोडशपदार्थों का पृष्ठसंख्या बी विषयसूचिकामें दिये हैं। ताकी मुमुक्षुओं को अपेक्षित शब्दों को ढूंढने में सुविधा हो।

९)श्रीपण्डित पीताम्बरजी ने 'श्रुतिषड्लिंगसंग्रह' का जो हिन्दी में अनुवाद करिके इस 'श्री विचारचन्द्रोदय' में जोडे हैं, उसका मूल

संस्कृतग्रन्थ श्रीआनन्दगिरी विरचित‘तत्त्वालोक’ है।उस ‘तत्त्वालोक’ को बी हमनें ‘श्रुतिषड्लिंगसंग्रह’ के अन्तमें जोड दिये हैं।

१०)कुछ कलाओं के अन्तमें उस कलाओंके विषयानुसारी रेखा चित्रों को बी दिये हैं।

११)अन्त में इस ग्रन्थमें उद्धृत किये प्रमाणोंका अकारादि क्रमसैं सूची दिया गया हैं। और हमनें जितनें ग्रन्थोंसैं प्रमाणोंको उल्लेख किये हैं, उन ग्रन्थों का सूची बी अकारादि क्रमसैं दिया गया है।

१२)अन्तिम पृष्ठमें श्रीपण्डित पीताम्बरजी का आरती है।

आनन्द है कि जिसकिसी प्रकारसैं श्रीपण्डित पीताम्बरजीके निस्सीम कृपासैं,ईश्वरकी अनुकम्पासैं इस ‘श्रीविचारचन्द्रोदय’ग्रन्थकी अद्भुत सुधारण हुई है। दुनियाभरके सभी मुमुक्षुओंको इस ग्रन्थ प्राप्त हो, सबका कल्याण हो,या उद्देशसैं इस महत् ग्रन्थको मुद्रित किये हैं,कृपया श्रीगुरुमुखसैं अध्ययन करें। स्वतन्त्रसैं कदापि करै नहीं।

**प्रमादेनाप्रबोधेनाऽयुक्तञ्चेल्लिखितं यदि।**
**परिशोध्य तदस्मासु दयां कुर्वन्तु साधवः॥**

इस ग्रन्थकी सुधारनेमैं अनजानेमें कुछ तृटियाँ हुई हो, तो सुहृद विद्वज्जनोंने कृपया सँभार लेवै। ऐसी हमारी विनम्र प्रार्थना है।

आशा करतें हैं,ईश्वरकी औ श्रीपण्डितपीताम्बर पुरुषोत्तमशर्माजी के आशीर्वाद हम सबको सदा प्राप्त हो॥

लोकास्समस्ताःसुखिनो भवन्तु
ॐ तत्सत् ॐ

चराचर सुखाभिलाषी
**स्वामी ब्रह्मविद्यानन्द**

**ॐ गुरुपरमात्मने नमः**

# श्री विचारचन्द्रोदय

## अथ प्रथमकला प्रारम्भः॥ १ ॥

### उपोद्घातवर्णन[1]

**मनहर छन्द[2]**

**पुरुषइच्छाविषय पुरुषार्थ जोई सोई।**
**दुः खनाश सुखप्राप्तिरूप मोक्ष मानहु ॥**
**हेतु ताको ब्रह्मज्ञान सो परोक्ष अपरोक्ष।**
**तामैं अपरोक्ष दृढ अदृढ दो गानहु ॥**
**मोक्षको साक्षात् हेतु दृढ अपरोक्षज्ञान।**
**हेतु[3] ता विचार जीवब्रह्मजग जानहु ॥**
**तीनवस्तुरूप जड चेतनदो जड मिथ्या-**
**माया ब्रह्मचित् "सो मैं"पीतांबर [4]स्यानहु ॥१ ॥**

---

1 प्रतिपादन करनेयोग्य अर्थकूं मनमें राखिके तिसकेअर्थ अन्यअर्थ का प्रतिपादन उपोद्घात है।जैसे किसीकूं दूसरेके गृहसैं छांछ लेनेकी होवें।तब वह बात मनमें राखिके तिसके अर्थ "तुम्हारी गो दुग्ध देती है वा नहीं ?"इत्यादिरूप अन्यवार्ताका कथन उपोद्घात है॥ तैसैं इहां प्रतिपादन करनेयोग्य जो विचार।ताकूं मनमैं राखिके तिसके आरंभ अर्थ अन्य मोक्षआदिक पदार्थनका कथन उपोद्घात है॥**"प्रतिपाद्य-मर्थं बुद्धौसंगृह्य तदर्थमर्थान्तर कथनम्-उपोद्घातः "**।(विवरणे पृ.२८, महेश अनुसन्धान संस्थान & लक्षणावलिः)

2 कोई बी रागके ध्रुव पदमैं गाया जावै है।

3 अन्वयःता (दृढअपरोक्षज्ञानका) हेतु विचार है।

4 ऐसा निश्चय करो।

## पद्यका अर्थ

सब पुरुषोंकी इच्छाका जो विषय है,सो ही पुरुषार्थ है। सब दुः खोंकी आत्यन्तिकनिवृत्ति और परमानन्दकी प्राप्ति ही सब पुरुषोंकी इच्छाका विषय होता है। वेदान्तमें इसी को मोक्ष का स्वरूप माना है। इस मोक्ष का साधन ब्रह्मज्ञान है और यह ब्रह्मज्ञान परोक्ष औ अपरोक्ष भेदसैं दो प्रकार का होता है। इन दोनों में अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान दृढ़ औ अदृढ़ दो प्रकारका होता है। मोक्षका साक्षात् साधन दृढ़अपरोक्ष ब्रह्म ज्ञान ही है। इस दृढ़-अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान का साधन विचार है। जीव, ब्रह्म और जगत्- इन तीनों वस्तुओं के स्वरूप को यथार्थ जानना ही विचार है। इन तीनों में से जगत् तो जड़ है और जीव एवं ब्रह्म चेतन हैं। इस प्रकार तीनोंके जड़ एवं चेतनरूपसैं दो भाग होते हैं। इन दोनोंमें जड़ तो मिथ्या एवं मायिक (कल्पित) है और चेतन व्यापक है। पीताम्बरजी कहते हैं "मैं ही वह व्यापक चेतन हूँ", ऐसा निश्चय करो।

**१ प्रश्नः-पुरुषार्थ सो क्या है ?**

उत्तरः -सर्वपुरुषनकीइच्छाका जो विषय सो पुरुषार्थ[5] है

---

5 धर्म अर्थ काम मोक्ष। इन च्यारीका नाम पुरुषार्थ॥ तिनमें प्रथमके तीन गौण हैं। तिनकूं छोडिके इहां अंतके मुख्य पुरुषार्थका ग्रहण है। जाकूं अज्ञानान्धकारसे पार होनेकी इच्छा होवै, सो पुरुष विषयोंमें आसक्ति कदापि नहीं करैं; काहेतैं? यह धर्म,अर्थ,काम औ मोक्षकी प्राप्तिमें ब़हुत बाधक हैं॥ इन चार पुरुषार्थोंमें बी सबसे श्रेष्ठ मोक्ष ही मान्या है; काहेतैं? अन्य तीन पुरुषार्थोंमें सर्वदा कालका भय रहै है॥

**२ प्रश्नः-सर्वपुरुषनकूं किसकी इच्छा होवैं है?**

उत्तरः -सर्वपुरुषनकूं सर्वदुः खनकी निवृत्ति औ परमानंद की प्राप्तिकी इच्छा होवैं हैं ॥

**३ प्रश्नः –सर्व दुः खनकी निवृत्ति औ परमानंदकी प्राप्ति सो क्या है ?**

उत्तरः -सर्वदुः खनकी[6] (अत्यंत)निवृति[7] और(स्वस्वरूप) परमानंदकी[8] प्राप्ति[9]। यह मोक्षका[10] स्वरूप है ॥

इस मोक्षका स्वरूप(लक्षण)में यदि 'कारण(अज्ञान) सहित सर्व दुःखनकी अत्यंत निवृत्ति'इतनाही भाग कहै तो समूलदुःखोन्मूलन मात्रको मोक्षकहनैहारे वैशेषिकादितार्किक मतों की प्राप्ति होवैगी। इस अतिव्याप्ति निवारणार्थ लक्षणमें 'परमानन्दकी प्राप्ति' इतनाअंश निवेश करै हैं।यदि 'अज्ञान निवृत्ति तथा परमानन्दकी प्राप्ति'इतना ही अंश मोक्षका लक्षण कहै तो,नित्यनिरतिशय सुखकी अभिव्यक्ति तथा निःशेषदुःखोच्छित्तिको मोक्ष कहनैहारे पूर्वमीमांसक भाट्टमतकी प्राप्ति होवैगी। वे ऐसे कहै हैं—

**यन्न दुःखेनसंभिन्नं न च ग्रस्तमनन्तरम्।**
**अभिलाषोपनीतं च तत्सुखं स्वःपदास्पदम्॥**(तन्त्रवार्तिक)
(मैत्रायण्युपनिषत् ६-३६; बृह.वार्तिकसारः१-१-२४६; म.भा-अनु.दानधर्म पर्व)

---

6 अज्ञानसहित जन्ममरणादिक दुः ख कहिये हैं।
7 मिथ्यापनैका निश्चयरूप बाध निवृत्ति है॥
8 परमप्रेमका विषय परमानंद है॥
9 इहां कंठभूषणकीन्यांई नित्यप्राप्तको प्राप्ति मानीहै॥(आत्मबोध ४४)
10 कर्ताभोक्तापनै आदिकअन्यथाभावकूं छोडिके **स्वस्वरूपसैं** स्थिति ही मोक्ष है॥कितनैक लोकतौ स्वर्ग,वैकुंठ,गोलोक,ब्रह्मलोक आदिक की प्राप्तिकूं मोक्ष जानते है। सो वेदसैं विरुद्ध है॥ ऊपर कह्या मोक्ष का स्वरुप वेद अनुसारी है॥

जो दुःखसैं कदापि संभिन्न=मिश्रित न हो तथा भविष्यमें बी दुःखसैं मिश्रित न हो सके, या बाद में जो ग्रस्त=नष्ट न हो सके;तथा अभिलाषा=इच्छामात्रसे प्राप्त होनेवाला सुखविशेष ही स्वर्ग है।और वह सुखविशेष दुःखविरोधी है और वह स्वर्ग अपनी सत्तासे दुःखको समूल नष्ट कर देता है और यह स्वर्ग क्षय=विनाशशाली बी नहीं है।इसमें श्रुति प्रमाण है-**"अपाम सोमममृताअभूम"**(ऋ.८-४८-३) हमने यज्ञमें सोमरस का पान किया, अतःहम अमर हो गये॥

इस भाट्टमतमें अतिव्याप्ति निवारण केलिए मोक्षके लक्षणमें 'स्वस्वरूप' शब्द 'परमानन्द' शब्दसे पहले जोडना चाहिए। पूर्व मीमांसकों के जो परमानन्द शब्द वाच्य स्वर्गादि सुख(भोग) है, वह स्वस्वरूपसे भिन्न अनात्मसंबन्धी अनित्य सुख हैं।**"तद्यथेह कर्मजितो लोकः क्षीयत एवमेवामुत्रपुण्य जितोलोकः क्षीयते"**(छां.८-१-६)जैसैं यहाँ कृषिवाणिज्य सेवादि कर्मसे प्राप्तहुआ(धान्य,धन इत्यादि)लोक क्षीण हो जाता है, तैसैं परलोकमें अग्निहोत्रादि पुण्यकर्मसैं प्राप्त किया हुआ (भोग)लोक बी क्षीण हो जाता है।**"ते तं भुंत्त्वा स्वर्ग-लोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति"**(गीता.९-२१)वे सोमरस पीनेवाले स्वर्गमें गये हुए स्वर्गकामी वहाँ प्रचुर स्वर्गीय सुखका उपभोग कर,पुण्यका क्षय होनेपर मृत्युलोक में आते हैं,अर्थात् यहाँ फिर जन्म लेतेहैं॥**"यत्कृतकं तदनित्यं"** जो कर्मसाध्य होवै,सो अनित्यही होवै है। इत्यादि श्रुति स्मृति न्यायसे कर्मजन्य सुख क्षयशील होवै है।

स्वस्वरूप ब्रह्मात्मचैतन्य परमानन्दरूप है-इस विषयमें अनेकों श्रुतियाँ प्रमाण हैं। जैसैं-**'रसो वै सः ,रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति, को ह्येवान्यात् कःप्राण्यात्, यदेष आकाश आनन्दो न स्यात्, एष ह्येवानन्दयाति, सैषाऽऽनन्दस्य मीमांसा भवति,आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्नबिभेति कुतश्चन"**(तै.उ.२।७,८,६)**"आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्"**

(तै.६/६),**"तदेतत्प्रेयः पुत्रात्प्रेयो वित्तात्प्रेयोऽन्यस्मात्सर्वस्मादान्तरतरं यदयमात्मा"**(बृह.१-४-८) इत्यादि श्रुतिवाक्य बी आत्माकी आनन्द-स्वरूपताका प्रतिपादन करते हैं। तथा—

**इयमात्मा परानन्दःपरप्रेमास्पदं यतः।**

**मा न भूवं हि भूयासमिति प्रेमात्मनीक्ष्यते ॥**(वेदान्त पञ्चदशी १-८)

अर्थ–यह आत्मा निरतिशय सुख-स्वरूप है क्योंकि इसमें परम प्रीति रहती है।कभी कोई यह नही चाहता कि मैं न रहूँ। प्रत्येक यही चाहता है कि मैं सदा बना रहें।औ—

"सर्व दुः खनकी निवृत्ति औ परमानन्दकी प्राप्ति"रूप मोक्ष विषै-**"तरति शोक मात्मवित्"**(छां.उ.७।१।३)आत्मवेत्ता पुरुष शोकसे उपलक्षित अज्ञान तत्कार्य संसाररूप दुः खको तर जाता है, एवं **"ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति"**(मुं.उ.३।२।६) ब्रह्मवेत्ता पुरुष ब्रह्म ही हो जाता है- इत्यादि श्रुतियाँ बी उक्त तथ्य का ही प्रतिपादन करती हैं।

मोक्षकी स्वरूप(लक्षण)में 'स्वस्वरूप' शब्दका, स्वयं श्रीपण्डित पीतांबरजी ने दसवाँ टिप्पण में निवेश किये हैं।

यदि कोई शंका करैं-तत्त्वमस्यादि महावाक्योंकी विचारसे जनित **'अहं ब्रह्मास्मि'** ज्ञानसाध्य अविद्या तत्कार्य संसाररूप सर्वदुः खनकी निवृत्ति जो है, सो प्रयोजन कोटिमें होवो। किन्तु स्वस्वरूप आनन्द प्राप्ति जो है, सो नित्यप्राप्त होनेसैं एवं ज्ञानसाध्य न होनेसैं, उसमें प्रयोजनवत्व कैसे घटेगा? सो शंका बनै नहीं-ब्रह्मात्मस्वरूपानन्द नित्यप्राप्त होनेपर बी अविद्यावस्थामें विस्मृतकण्ठचामीकर न्यायसे अप्राप्तकी न्यांई भासे है। जब विद्यासे अविद्याकी निवृत्ति होवै, तब विज्ञातकण्ठाभरण की अभिव्यक्ति की न्यांई भासे है।इसलिए कोई अनुपपत्ति (असङ्गत) नहीं है।

**आत्मा तु सततं प्राप्तो ह्यप्राप्तवदविद्यया।**

**तन्नाशे प्राप्तवद्भाति स्वकण्ठाभरणं यथा ॥**(आत्मबोध ४४)

**॥ अथ द्वितीयकला प्रारंभः ॥ २ ॥**

**॥ प्रपंचारोपापवाद ॥**

॥ मनहर छंद ॥

**प्रपंचारोपापवाद करि निष्प्रपंच वस्तु**
**ब्रह्मजानिके अवस्तु-मायादिक भानिये ॥**
**ब्रह्म माया संबंध रु जीवईश भेद तिन।**
**षट् ये अनादि तामैं ब्रह्मानंत मानिये ॥**
**वस्तु में अवस्तु कर कथन आरोप [३३]बाधि**
**अवस्तु वस्तुकथन अपवाद जानिये ॥**
**गुरुके प्रसाद यह युक्ति जानि पीतांबर।**
**[३४]तज तमका रज आरज निज जानिये ॥ २ ॥**

जगत् का आरोप-अपवाद (मण्डन-खण्डन)करके प्रपञ्च रहित वस्तुरूपअधिष्ठानब्रह्मको जानकर अवस्तुरूप अध्यस्त माया एवं उसके कार्य जगत् का बाध निश्चय करो।(१)शुद्ध ब्रह्म,(२)माया(३)ब्रह्म औ माया का सम्बन्ध(४)जीव,(५) ईश्वर और (६)जीव अरु ईश्वर इन दोनोंका भेद; ये छः अनादि हैं।इन छः में ब्रह्मको अनन्त मानो। अधिष्ठानमें अध्यस्तका कथन करना आरोप जानो। अध्यस्तका बाधकर अधिष्ठान का कथन अपवाद जानो। पीताम्बरजी कहतें हैं कि सद्गुरुकी कृपासैं यह युक्ति जानकर,हे आरज (विवेकी)!

३३.अन्वयः–अवस्तु बाधि वस्तुकथन अपवाद जानिये।

३४.अन्वयः-हे आरज कहिये विवेकी तमका रज तज। निज (स्वरूप)जानिये ॥

अज्ञान और उसके कार्य जगत् को त्यागकर स्व-स्वरूप को जानो।

**३३ प्रश्नः-शुद्धब्रह्मविषै प्रपंचका [३५]आरोप कैसैंहुवा है?**

उत्तरः –अनादि शुद्धब्रह्मकेविषै [३६]अनादि [३७]कल्पित ❁प्रकृति है।तिस प्रकृतिका ब्रह्मकेसाथि अनादिकल्पित तादात्म्य संबंध है कहिये"कल्पितभेद सहित वास्तव अभेदरूप संबंध"है॥

३५.ब्रह्मरूप वस्तुविषै अज्ञानतत्कार्यरूप अवस्तुका कथन **आरोप** है। याहीकूं **अध्यारोप** बी कहै हैं।

३६.उत्पत्तिरहित वस्तुस्वरूपसैं **अनादि** है॥ऐसे शुद्धब्रह्म।प्रकृति। तिनका संबंध। ईश्वर। जीव औ तिनका भेद। ये षट् हैं। अरु प्रवाह रूपसैं प्रपंच बी अनादि है।

**"जीव ईशो विशुद्धा चित् तथा जीवेशयोर्भिदा।अविद्या तच्चितोर्योगः षडस्माकम् अनादयः॥"**(सांप्रदायिकाः)

३७.जो होवैनहीं औ स्वप्नपदार्थनकीन्यांई भ्रांतिसैंभासे सो **कल्पित** है॥

(माया,अविद्याआदि शब्दवाच्य प्रकृति **अनादि** है-इस विषयमैं प्रमाण)

**❁प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि।**
**विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान्॥**(गीता १३-१९)

हे अर्जुन, प्रकृति और पुरुष दोनोंकोही तुम अनादि यानी कारण रहित जानो एवं विकार तथा गुणोंको प्रकृतिसैं उत्पन्न जानो॥

**माया नाम *अनादि* अन्तवती।**(सर्वसारोपनिषत् १५)

**अनादिअविद्यावासनया जातोऽहमित्यादिसङ्कल्पो बन्धः॥**(निरालम्बोपनिषत् १८)